राजर्षि भर्तृहरि मत्स्य विश्वविद्यालय, अलवर

पाठ्यक्रम

बी.ए. (द्वितीय वर्ष) - तृतीय सेमेस्टर (हिन्दी साहित्य)

रीतिकालीन काव्य

1 क्रेडिट-25 अंक
6 क्रेडिट-150 अंक
प्रश्न पत्र- 120 अंक
आंतरिक मूल्यांकन -30 अंक

उद्देश्य Objectives

1 .विद्यार्थियों में महान कवियों की रचनाओं के माध्यम से लेखन कौशल और अभिव्यक्ति क्षमता का विकास
2 .हिन्दी साहित्य के अध्ययन के माध्यम से साहित्यिक ब्रजभाषा के स्वरूप तथा विकास की जानकारी प्राप्त करना
3 . हिन्दी साहित्य की रीतिकालीन काव्य परंपरा से परिचित कराना .
4. सृजनात्मक लेखन और विवेचनात्मक दृष्टि का विकास करना

अधिगम प्रतिफल Learning outcomes)

1. रीतिकाल के महान कवियों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के अध्ययन के माध्यम से साहित्यिक कौशल का विकास कर सकेंगे
2. रीतिकालीन आचार्यों की रीति सम्बन्धित अवधारणाओं को काव्य के माध्यम से समझ सकेंगे।
3. रीतिकाल की सामाजिक , सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय पृष्ठभूमि से परिचित होंगे।
4. रीतिकाल की समृद्ध परम्परा से अवगत होकर रोजगार के विभिन्न अवसर प्राप्त कर सकेंगे |

प्रश्नपत्र का अंक विभाजन

यह प्रश्न पत्र तीन खंडों में विभक्त है।

खण्ड-अ के अन्तर्गत प्रश्न संख्या **1** , जिसमें सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से दस अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न पूछे जाएंगे। प्रत्येक प्रश्न 2 अंकों का होगा।

खण्ड -ब के अंतर्गत प्रश्न संख्या **2,3,4,5** सप्रसंग व्याख्या के होंगे जिसमें दूसरी, तीसरी और चौथी इकाई में निर्धारित पाठ में से कुल **चार (4)** काव्यांश [एक कवि से एक, आंतरिक विकल्प सहित] व्याख्या हेतु पूछे जाएंगे| प्रत्येक प्रश्न दस **10** अंकों का होगा।

खण्ड -स के अन्तर्गत प्रश्न संख्या **6,7,8** व **9** निबंधात्मक प्रश्न हैं ,जिसमें प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न [आंतरिक विकल्प सहित]पूछा जाएगा। प्रत्येक प्रश्न **15** अंकों का होगा।

प्रथम इकाई

(i) रीति काल का इतिहास, परिस्थितियाँ [सामाजिक,सांस्कृतिक एवं राजनीतिक], नामकरण

(ii) रीति कालीन काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ (रीतिबद्ध , रीतिमुक्त ,रीति सिद्ध)

(iii) प्रमुख कवि व उनकी रचनाएँ

द्वितीय इकाई

1. **केशव दास** - रामचंद्रिका - संपादक -लाला भगवानदीन,
   रावण - अंगद संवाद

2. **बिहारी** - बिहारी रत्नाकर - संपादक - जगन्नाथदास रत्नाकर

(1) मेरी भव बाधा हरौ .. ...

(ii) झीने पट में झुलमुली .....

(iii) अजौं तरयौना ही रह्यो ...

(iv) जम करि-मुंह तरहरि पर्यो .. ..

(v) तौ पर बारों उरबसी....

(vi) कहत, नटत, रीझत, खिझत ....

(vii) कौन भांति रहिहै बिरदु.. ..

(viii) नहिं पराग नहिं मधुर मधु.. ..

(ix) मंगल बिंदु सुरंग, मुख ससि ...

(x) तंत्री नाद कवित्त-रस....

(xi) मकराकृति गोपाल के....

(xii) या अनुरागी चित्त की....

(xiii) करी विरह ऐसी....

(xiv) जप माला छापा तिलक.. ..

(xv) आडे दे आले बसन.. ..

(xvi) स्वारथु सुकृतु न श्रम वृथा

(xvii) कोटि जतन कोउ करे....

(xviii) दृग उरझत टूटत कुटुम.. ..

(xix) बतरस लालच लाल की....

(xx) चिरजीवौ जोरी जुरै....

3. देव

(i) सुनौ कै परम पद... .

(ii) डार द्रुम पलना....

(iii) कथा में न कंथा में....

(iv) जब ते कुंवर कान्ह....

(v) प्रेम गुन बाँधि.. ..

(vi) बरुनी बघंबर औ गूदरी....

(vii) धार में धाय धंसी निरधार ह्वै ...

(viii) ऐसो जु हौं जानत हि ... .

(ix) रीझि रीझि रहसि रहसि....

(x) राधिका कान्ह को ध्यान करै....

(xi) झहरि झहरि झीनी बूंद....

(xii) सांसन ही सौं ...

(xiii) खेलत फाग ....

(xiv) आई बरसाने ते... .

(xv) जाके न काम न क्रोध....

तृतीय इकाई

4. भूषण - (भूषण ग्रंथावली - सं. आ. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र)

(i) साहि तनै सरजा रामरथ... .

(ii) देखत ऊँचाई उधरत....

(iii) कामिनी कंत सों... .

(iv) पूरब के उत्तर के....

(v) साजि चतुरंग सेन ....

(vi) ऊँचे घोर मंदर के

(vii) उतरि पलंग से न ... .

(viii) इन्द्र जिमि जम पर... .

(ix) छूटत कमान बान ....

(x) जिन फन फूत्कार ....

(xi) गरुड़ को दावा सदा ....

(xii) बेद राखे बिदित....

(xiii) आपस की फूट ही तें.... .

(xiv) चाक चक्र चमू के....

(xv) राजत अखंड तेज....

5. घनानंद - (घनानंद कवित्त सं . आ. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र

(i) रूप निधान सुजान सखि....

(ii) आंखि ही मेरी पै ....

(iii) हीन भए जलमीन....

(iv) मीत सुजान अनीति करि----

(v) चोप चाह चायनि....

(vi) ए रे बीर पौन... .

(vii) कारी कूर कोकिला....

(viii) प्रीतम सुजान मेरे हित के....

(ix) छवि को सदन....

(x) वहै मुसक्यानि....

(xi) दिननि के फेर सों....

(xii) भोर ते साँझ लौं....

(xiii)) सोये न सोइबो... .

(xiv) निसि द्यौस खरी..

(xv) अति सूधो सनेह को....

चतुर्थ इकाई

6. पद्माकर - (पद्माकर ग्रंथावली -सं - विश्वनाथ प्रसाद मिश्र)

(i) विधि के कमंडल की....

(ii) नीर के निकट रेनु....

(iii) जमपुर द्वारे लगे.... .

(iv) कूरम पे कोल....

(v) कूलन में केलिन में... .

(vi) ह्वै थिर मन्दिर में....

(vii) भोग से रोग... . .

(viii) सम्पत्ति सुमेर की....

(ix) औरे भांति कुंजन में....

(x) फाग की भीरे....

7. सेनापति - (सेनापति कृत कवित्त रत्नाकर - सं. - उमाशंकर शुक्ल)

(i) सुरतरु सार की....

(ii) करत कलोल युति दीरघ....

(iii) कालिंदी की चार निरधार है.....

(iv) सेनापति उनए नए जलद सावन के....

(v) केतकि असोक नव चम्पक.....

(vi) मालती की माल तेरे तन कौ

(vii) चित्त चुभी आनि , मुसकानि.... .

(viii) बरन बरन तरु फूले....

(ix) छूटत फुहारे सोई बरसा....

(x) सीत को प्रबल सेनापति... .

8. आलम - (आलम ग्रंथावली - सं. - विद्यानिवास मिश्र)

(i) पौन के परस-... .

(ii) कहूँ भूल्यौ बेनु....

(iii) अंग अंग जगै जोति....

(iv) अटा चढ़ी हुती....

(v) चंद को चकोर देखै.... .

(vi) निधरक भई अनुगवति... .

(vii) तरनिजा तट बंसी-वट... .

(viii) वारै ते न पलक....

(ix) पंकज पटीर देखे... .

(x) उत्तपनि रत रितुपति... .

आंतरिक मूल्यांकन हेतु किन्हीं दो विषयों पर निबंध लेखन

(क) रीति काल की परिस्थितियाँ (राजनीतिक, सामाजिक , सांस्कृतिक)

(ख) रीतिकाल का काल निर्धारण एवं नामकरण

(ग) रीतिकालीन काव्य परम्परा और प्रमुख कवि

(घ) घनानंद का विरह वर्णन

(ङ) रीतिबद्ध और रीतिमुक्त काव्य धारा में समानता एवं अंतर

(च) भूषण के काव्य में राष्ट्रीयता

(छ) बिहारी की काव्य कला

(ज) सेनापति का ऋतु वर्णन